SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

यमुनातीरे

अंक : बारह

हिन्दी वार्षिक पत्रिका (वर्ष 2024)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)
दिल्ली-110054

हिन्दी दिवस 2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन करते माननीय गृह मंत्री अमित शाह जी।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

यमुनातीरे

अंक : बारह

हिन्दी वार्षिक पत्रिका
(वर्ष 2024)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)
दिल्ली-110054

अंकः बारह
वर्षः 2024

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार), दिल्ली
वार्षिक हिन्दी पत्रिका

मुख्य संरक्षक :

श्री पुरूषोत्तम तिवारी
महानिदेशक

संरक्षक :

श्री टी. इमलिवाबांग कबज़ार
निदेशक मुख्यालय

सम्पादक मण्डल :

श्री रोहित गर्ग
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती गीता मेहता
(हिन्दी अधिकारी)

डॉ. शिप्रा पांडे
(हिंदी अधिकारी)

सह-संपादक :

सुश्री दीपा शर्मा
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री विकास सैनी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ, रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएँ हैं। कार्यालय या संपादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

अनुक्रमणिका

पृ.सं.

अनुक्रमणिका 3

संदेश (अमित शाह गृह मंत्री) 4

संदेश (श्री पुरूषोत्तम तिवारी, महानिदेशक) 6

संदेश (श्री टी. इमलिवाबांग कबज़ार, निदेशक मुख्यालय) 7

सम्पादकीय (श्री रोहित गर्ग, व.ले.प.अ.) 8

आपके पत्र 9

पृ.सं.

1. भार 15
मुकेश कुमार सक्सेना

2. शिक्षक 16
मुकेश कुमार सक्सेना

3. मेरे दो अनमोल रतन (व्यंग्य) 17
प्रदीप कुमार चौधरी

4. आप बात नहीं समझे (व्यंग्य) 19
प्रदीप कुमार चौधरी

5. संस्कार 21
आनन्द कुमार सिंह

6. पर मंजिल यह नहीं 22
पवन मिश्रा

7. डिजिटल टेक्स्ट की लोकप्रियता 23
गीता मेहता

8. बुढ़ापा 24
नंदिनी दत्ता रॉय

9. उम्रदराज 25
गीता रानी

पृ.सं.

10. दोस्त 27
नवीन कुमार

11. जल संरक्षणः नवीन विचार एवं पहल 29
सीमा कुमारी

12. इन्तजार 31
पंकज मोहन जायसवाल

13. किसान अन्नदाता या भाग्यविधाता 32
नवीन कुमार मोरल

14. प्रकृति 34
गीता मेहता

15. सकारात्मकता 36
नंदिनी दत्ता रॉय

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)

संदेश

यह हम सब के लिए गर्व का विषय है कि हमारा कार्यालय वार्षिक गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

हमारे देश के साहित्य और संस्कृति के विकास और संवर्धन में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसकी तुलना किसी और भाषा से नहीं की जा सकती। हिंदी हमारे देश की जनभावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए विश्व भाषा बनने की राह पर तेजी से आगे बढ़ रही है और ज्ञान–विज्ञान की समस्त विधाओं को अपने आप में समेट कर विश्व पटल पर भारत को गौरव प्रदान कर रही है। हमारे छोटे–बड़े सभी प्रयास इसे विश्व भाषा बनाने में सहायक हो रहे हैं। 'यमुनातीरे' का प्रकाशन भी इस दिशा में एक सकारात्मक प्रयास है।

वार्षिक गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' में प्रकाशित सभी रचनाएं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनशील प्रतिभा को दर्शाती है और मुझे आशा है कि विविध विषयों से संबंधित उपयोगी एवं स्तरीय सामग्री ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ एवं गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

पुरूषोत्तम तिवारी

महानिदेशक

संदेश

हमारे कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका यमुनातीरे के 12वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। हमारा उद्देश्य राजभाषा के महत्व को समझते हुए जनमानस और कर्मचारियों के मन में राजभाषा के प्रति आस्था जगाना और उन्हें अपने कार्यक्षेत्र में यथासंभव कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित करना है। वार्षिक गृह पत्रिका यमुनातीरे का प्रकाशन राजभाषा के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

राजभाषा कार्यान्वयन के साथ–साथ पत्रिका विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी सृजनात्मक, साहित्यिक रूचियों को व्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है, कि गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' के इस अंक से आप सभी को राजभाषा हिंदी को और अधिक प्रतिबद्धता एवं उत्साह के साथ आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलेगी तथा यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार में अपनी बहुमूल्य भूमिका निभाएगी। आपके सुझाव और सहयोग से हम इस पत्रिका के प्रत्येक अंक को और बेहतर बनाने हेतु प्रयासरत रहेंगे। मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी हिंदी प्रेमियों और पत्रिका परिवार को अपनी अनंत शुभकामनाएँ देता हूँ।

टी. इमलिवाबांग कबज़ार

निदेशक (मुख्यालय)

सम्पादकीय

विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति केवल कथन मात्र से नहीं हो सकती है। विचारों और भावनाओं को मूर्त स्वरूप प्रदान करने तथा दीर्घजीवी बनाने के लिए उनका कागज पर उकेरा जाना आवश्यक है। विभागीय पत्र–पत्रिकाएं अपने सृजनकारों में अन्तर्निहित रचनात्मक लेखन कौशल को परिमार्जित एवं परिपोषित कर पत्रिकाओं के माध्यम से उन्हें संयोजित करके दीर्घजीवी बनाती है।

वार्षिक गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' का नया अंक राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास एवं हिंदी में लेखन तथा पठन–पाठन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रकाशित किया जा रहा है। यह पत्रिका राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की पत्रिकाओं के प्रकाशन से संबंधित अपेक्षाओं को पूरा करने का हर संभव प्रयास कर रही है और मुझे यह कहते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस प्रयास में कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी अपने लेखन की रचनात्मकता के माध्यम से अपना अमूल्य योगदान प्रदान कर रहे हैं।

यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कल्पनाओं एवं भावनाओं को साकार रूप देते हुए उनकी हिंदी में लेखन क्षमता को नए पंख लगाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है। आपके सुझाव और सहयोग से हम इस पत्रिका के प्रत्येक अंक को और बेहतर बनाने हेतु प्रयासरत रहेंगे।

रोहित गर्ग

रोहित गर्ग

(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

राजभाषा

आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''यमुनातीरे'' का 11वाँ अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं। सुश्री गीता रानी की एक कदम सकारात्मकता की ओर, श्री पंकज मोहन जायसवाल की "समभाव", सुश्री सीमा कुमारी की "नारी सृजन का आधार", श्री सुरेश कुमार हेला की "श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा", श्री पंकज कुमार मौर्य की "पर्वत की व्यथा" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''यमुनातीरे'' का ग्यारहवां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सादर धन्यवाद। पत्रिका की साज–सज्जा एवं कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर "पर्वत की व्यथा", 'श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा', "आज का युवा" एवं "सुबह की सैर" रुचिकर एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहें हैं। पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 11 वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज–सज्जा अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं उच्च कोटि की हैं। श्री पंकज कुमार मौर्य की रचना "पर्वत की व्यथा", श्रीमती गीत रानी की रचना "एक कदम सकरात्मकता की ओर", श्री सुरेश कुमार हैला की रचना "श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा", श्रीमती गीता मेहता की रचना "आज का युवा" विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओडिशा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय की पत्रिका "यमुनातीरे" का 11वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। यह अंक अपने कलेवर, साज–सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित श्री पंकज कुमार मौर्य द्वारा लिखित "पर्वत की व्यथा", श्री रमेश कुमार द्वारा लिखित "छोटी सी कहानी जो जिंदगी बदल देगी", श्री नवीन कुमार द्वारा लिखित "फौजी", श्रीमती नंदिनी दत्ता रॉय द्वारा लिखित

"एक कदम परोपकार की ओर", श्री नवीन कुमार मोरल द्वारा लिखित "बेरोजगारी अवसर या अभिशाप" श्री रमेश कुमार द्वारा लिखित "चुटकुले", श्री सुरेश कुमार हेला द्वारा लिखित "श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा", श्री पंकज मोहन जायसवाल द्वारा लिखित "समभाव" और श्रीमती सीमा कुमारी द्वारा लिखित "नारी सृजन का आधार" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे, यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक)

तमिलनाडु, चेन्नई

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 05.10.2023 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की ई–प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री गीता रानी का लेख "एक कदम सकारात्मकता की ओर", श्री सुरेश कुमार हेला का लेख "श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा" तथा श्री नवीन कुमार मोरल का लेख "बेरोजगारी अवसर या अभिशाप" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं। इसके अतिरिक्त श्री पंकज कुमार मौर्य की कविता "पर्वत की व्यथा", श्री नवीन कुमार की कविता "फौजी", श्री पंकज मोहन जायसवाल की कविता "समभाव" तथा सुश्री सीमा कुमारी की कविता 'नारी सृजन का आधार', पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई के पात्र हैं व पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक)

हरियाणा चण्डीगढ़

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "यमुनातीरे" के ग्यारहवें अंक की एक ई–प्रति प्राप्त हुई है। स्सनेह धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ, मूलतः लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग इत्यादि अत्यंत मनोहर, सुपाठ्य, बोधगम्य तथा रुचिकर हैं। यह पत्रिका निस्संदेह राजभाषा के उन्नयन का प्रतीक है। राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति आप सभी का यह समर्पण एक उज्ज्वल भविष्य की ओर इशारा कर रहा है। पत्रिका में मुद्रित चित्र और इसकी साज–सज्जा वास्तव में चित्ताकर्षक है।

हमें विश्वास है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभेच्छाएं।

प्रधान महालेखाकार (ले.प.–II)

कर्नाटक, बेंगलूरु

आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें संस्करण की ई–प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री पंकज कुमार मौर्य, उपनिदेशक(एएमजी–II) की कविता "पर्वत की व्यथा", श्रीमती गीता रानी, निजी सचिव(केन्द्रीय कार्यालय) की रचना "एक कदम सकारात्मकता की ओर", श्री नवीन कुमार मोरल, लिपिक का लेख "बेरोजगारी अवसर या अभिशाप" आदि उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)

महाराष्ट्र, नागपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की प्राप्ति हुई है, अतः आपको बहुत–बहुत साधुवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट, बोधगम्य, रोचक तथा संग्रहणीय हैं। ये रचनाएँ राजभाषा के सम्बंधित नीतियों के अनुपालन तथा प्रचार–प्रसार हेतु बनाये गए विविध "इंतजार बाकी है", श्री सुरेश कुमार हेला का लेख "श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा", तथा गीता रानी का लेख "एक कदम सकारात्मकता की ओर" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल को सफल प्रकाशन के लिए पुनः बधाई और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

महालेखाकार (लेखा व हक)

राजस्थान, जयपुर

आपके कार्यालय से प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट समस्त रचनाएं पठनीय एवं उच्चस्तरीय हैं। रचनाओं के साथ विषय से संबंधित चित्रों का मुद्रण पत्रिका को आकर्षक बनाती है। सभी रचनाकारों का प्रयास सराहनीय हैं। पत्रिका के सुंदर प्रकाशन एवं सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाइयां। पत्रिका के आगामी अंक भी इसी प्रकार प्रकाशित होते रहे, शुभकामनाओं सहित।

(वी. चित्रा)

हिंदी अधिकारी

आपके कार्यालय से प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट समस्त रचनाएं पठनीय एवं उच्चस्तरीय हैं। रचनाओं के साथ विषय से संबंधित चित्रों का मुद्रण पत्रिका को आकर्षक बनाती है। सभी रचनाकारों का प्रयास सराहनीय हैं। पत्रिका के सुंदर प्रकाशन एवं सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाइयां। पत्रिका के आगामी अंक भी इसी प्रकार प्रकाशित होते रहे, शुभकामनाओं सहित।

महालेखाकार(लेखापरीक्षा–II)

तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

आपके कार्यालय की वार्षिक राजभाषा पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अति सुंदर है। पंकज कुमार मौर्य की कविता "पर्वत की व्यथा" नवीन कुमार की कविताएं "फौजी" और "शिक्षक" काफी मनभावक लगी। एक कदम सकारात्मकता की ओर, बेरोजगारी अवसर या अभिशाप, आज का युवा, सुबह की सैर आदि रचनाएं ज्ञानवर्धक और मर्मस्पर्शी हैं। उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),

हरियाणा, चण्डीगढ़

आपके कार्यालय की हिन्दी वार्षिक पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ आभार एवं धन्यवाद। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय हैं। पत्रिका के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। सभी को साधुवाद। श्री प्रदीप कुमार चौधरी का व्यंग्य "सुबह की सैर", श्री नवीन कुमार की कविता "फौजी", श्रीमती गीता मेहता की कविता "आज का युवा" तथा श्री पंकज कुमार मौर्य की कविता "पर्वत की व्यथा" विशेष रूप से प्रशंसनीय है। राजभाषा हिन्दी की प्रगति में "यमुनातीरे" सदैव अपना योगदान देती रहे, इसी शुभकामना के साथ समस्त पत्रिका परिवार को पुनः बधाई एवं आभार।

प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा)

बिहार, पटना

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी वार्षिक गृह पत्रिका, "यमुनातीरे" के ग्यारहवें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत

आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ–ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा चित्ताकर्षक हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं, वो हैं "नारी सृजन का आधार", "एक कदम सकारात्मकता की ओर", "समभाव", "सुबह की सैर", और "श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा", आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्तां एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)

पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी वार्षिक गृह पत्रिका "यमुनातीरे" का 11वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से रमेश कुमार का लेख "छोटी सी कहानी जो जिंदगी बदल देगी", नन्दिनी दत्ता राय का लेख "एक कदम परोपकार की ओर", नवीन कुमार का लेख "शिक्षक" एवं प्रदीप कुमार चौधरी का लेख "सुबह की सैर (व्यंग्य)" अत्यंत सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा की उतरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

महालेखाकार (ले. एवं हक.)

उत्तराखण्ड, देहरादून

आपके कार्यालय द्वारा "यमुनातीरे" के 11वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर पर्वत की व्यथा, एक कदम सकारात्मकता की ओर, एक कदम परोपकार की ओर, आज का युवा, नारी सृजन का आधार, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज–सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)

भोपाल

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के ग्यारहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर ऐतिहासिक स्मारकों की छवि सुंदर प्रतीत होती है। श्री रमेश कुमार की रचना "छोटी सी कहानी जो जिंदगी बदल देगी", श्री नवीन कुमार की कविता "फौजी", श्री नवीन कुमार मोरल का लेख "बेरोजगारी अवसर या अभिशाप", श्रीमती गीता मेहता की कविता "आज का युवा" तथा श्री प्रदीप कमार चौधरी का व्यंग्य लेख "सुबह की सैर" आदि रचनाएँ सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

निदेशक, वित्त एवं संचार लेखा परीक्षा

बेंगलूरु

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की प्राप्ति हुई है, अतः आपको बहुत–बहुत साधुवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट, बोधगम्य, रोचक तथा संग्रहणीय हैं। ये रचनाएँ राजभाषा से संबंधित नीतियों के अनुपालन तथा प्रचार–प्रसार हेतु बनाये गए विविध कार्यक्रमों में बहुत ही उपयोगी एवं सहायक हैं। पत्रिका में सम्मिलित श्री राजेश कुमार जांगिड़ की कविता "इंतजार बाकी है", श्री सुरेश कुमार हेला का लेख "श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा" तथा गीता रानी का लेख "एक कदम सकारात्मकता की ओर" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल को सफल प्रकाशन के लिए पुनः बधाई और पत्रिका की उत्तरोत्तर

प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

महालेखाकार (लेखा व हक)

राजस्थान, जयपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका आवरण पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रुचिकर एवं ज्ञानप्रद तथा उच्च कोटि की है। "नारी सृजन का आधार", "शहीद", "आज का युवा", "शिक्षक", "बेरोजगारी अवसर या अभिशाप", "एक कदम परोपकर की ओर", "पर्वत की व्यथा" विशेष रूप से सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाएं भिन्न–भिन्न विषयों के संबंध में जानकारी प्रदान करती है। विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतिकरण सराहनीय है। पत्रिका प्रकाशन के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एव प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

आपके कार्यालय की हिंदी ई–पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का छायांकन अति आकर्षक है व साथ ही पत्रिका की विषय वस्तु सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है। पत्रिका में समाहित समस्त लेख विचार प्रधान, प्रेरक एवं जीवनोपयोगी हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को समाहित करना अतुलनीय है। समस्त रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। किसी भी एक रचना की सराहना करना न्यायसंगत नहीं होगा। सभी रचनाओं में नवीनता और सृजनात्मकता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार (लेप.–1),

ओडिशा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की एक प्रति इस कार्यालय में प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ सुरूचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं इसमें प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक हैं। पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत लुभावना है एवं पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानियाँ, कविताएँ एवं यात्रा वृतांत भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाले हैं, विशेषकर सुश्री सीमा कुमारी द्वारा कृत "नारी सृजन का आधार", श्री पंकज कुमार मौर्य द्वारा कृत "पर्वत की व्यथा" एवं श्री नवीन कुमार द्वारा कृत "फौजी" अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं। सभी रचनाकार एवं पत्रिका के सुन्दर प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका आवरण पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रुचिकर एवं ज्ञानप्रद तथा उच्च कोटि की है। "नारी सृजन का आधार", "शहीद", "आज का युवा", "शिक्षक", "बेरोजगारी अवसर या अभिशाप", "एक कदम परोपकार की ओर", "पर्वत की व्यथा" विशेष रूप से सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाएं भिन्न–भिन्न विषयों के संबंध में जानकारी प्रदान करती है। विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतिकरण सराहनीय है। पत्रिका प्रकाशन के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "यमुनातीरे" के 11वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय है। विशेषकर रमेश कुमार का

आलेख 'छोटी सी कहानी जो जिंदगी बदल देगी', गीता रानी का आलेख 'एक कदम सकारात्मकता की ओर', नन्दिनी दत्ता राय का आलेख 'एक कदम परोपकार की ओर', नवीन कुमार की कविता 'फौजी', पंकज कुमार मौर्य की कविता 'पर्वत की व्यथा' और राजेश कुमार जांगिड़ की कविता 'इंतजार बाकी है' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

महानिदेशक लेखापरीक्षा,

पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता

आपकी पत्रिका "यमुनातीरे" का नवीन अंक प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें। विभागीय पत्रिकाएं अपने कार्यालय एवं अपने राज्य की संस्कृति और कार्यप्रणाली का उत्तम चित्रण करती है। इनके माध्यम से हमें कार्यालय एवं समाज में हो रही घटनाओं का सुंदर चित्रण प्राप्त होता है। आपकी पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं समान रूप से सरल, सहज, रोचक एवं ज्ञानवर्धक तो है ही इसके अतिरिक्त पत्रिका की साज सज्जा एवं मुद्रण भी अति उत्तम है, जिसके लिए लेखकों एवं संपादक मंडल के सदस्यों को विशेष बधाई।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका "यमुनातीरे" के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक),

जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर

भार

मुकेश कुमार सक्सेना
स.ले.प. अधिकारी
(केन्द्रीय कार्यालय)

धरती थक गयी,
भार सह–सह कर।
अत्याचारी बढ़ते,
कदम–कदम पर।।

तभी तो आते,
प्रलय यहाँ पर।
कहीं भूकम्प कहीं भूस्खलन,
यहाँ पर।।

धरा कह रही, व्योम
तुम भी मेरा अब भार उठाओ।
भेज रही प्राकृतिक आपदाओं से,
शेष को अब तुम सीख सिखाओ।।

पर यह मानव वसुधा का,
संदेश नहीं है पढ़ पाता।
अपने ही हाथों से खोद कब्र,
आगे ही नित बढ़ता जाता।।

काश यह मानव धरती से,
कुछ तो सीख ले पाता।
जितनी सहनशील धरती माता,
उतनी गहराई निज में लाता।।

तो आने वाली पीढ़ी को,
स्वर्ग यहीं पर दे जाता।

शिक्षक

मुकेश कुमार सक्सेना
स.ले.प. अधिकारी
(केन्द्रीय कार्यालय)

गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु,
गुरू देवो महेश्वरा।
गुरू साक्षात परम ब्रह्मा,
तस्मै श्री गुरूवे नमः।।
सच्चे पथ-प्रदर्शक हैं ये।
जीवन पथ पर रक्षक हैं ये।।
सही-गलत का भेद बताएं।
तभी ब्रह्मा से ऊपर पद पाएं।।
शिक्षक होते हैं ये बहुत महान।
देते हमको अपना ज्ञान।।
देते हमको ज्ञान अपार।
हैं सदा सम्मान के हकदार।।

व्यंग्य

मेरे दो अनमोल रत्न

प्रदीप कुमार चौधरी
सेवानिवृत्त स.ले.प. अधिकारी
शाखा कार्यालय, जयपुर

शर्मा जी ने अपने जीवन में काफी कुछ सहा था। नौकरी से मिलने वाली तनख्वाह से उनका गुजारा नहीं होता था। इसलिए कुछ छोटे मोटे काम जैसे सिलाई, बिजली का काम करके वह अपने परिवार का पालन पोषण कर लेते थे। उनके परिवार में पत्नी, एक वृद्ध माँ और दो पुत्र थे। एक दिन मैने देखा कि शर्मा जी कुछ परेशान दिखाई दे रहे थे। मुझे उनसे हमदर्दी थी। अतः मैंने पूछ लिया की शर्मा जी क्या बात है आज कुछ परेशान से दिखाई पड़ रहे हो। क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूं? परन्तु उन्होंने ना में अपना सर हिलाते हुए कहा, आप मेरी मदद नहीं कर सकते। मेरी परेशानी ही कुछ ऐसी है। मैंने कहा, चलिये सामने चाय की दुकान पर बैठकर अपनी परेशानी बताइयेगा, चाय का समय भी तो हो रहा है। चाय का आर्डर देकर मैं उनके समीप आकर बैठ गया।

अब शर्मा जी ने गला साफ करके बताना शुरू किया.. .....आपको तो पता है चौधरी जी, कि ईश्वर कि दया से मेरे दो बेटे हैं। दोनों पुत्रों के जन्म पर मैं और मेरी पत्नी धन्य हुए थे। सोचा था कि ये दोनों बुढ़ापे का सहारा बनेंगे पर अब जब दोनो बड़े होते जा रहे हैं तो उनकी हरकतें देखकर दुख होता है और उनसे उम्मीद भी कम है। आज के जमाने को देखते हुए उनकी समझ काफी कम लगती है। आज दुनिया में तेज तर्रार किस्म के लोग ही टिक पाते हैं। पर इस उम्र में जो समझ उनमें होनी चाहिए थी वह बिल्कुल भी नहीं है। चाय आ गयी थी एक चुस्की लेकर शर्माजी ने आगे बताना शुरू किया.....छोटे वाला पुत्र कई दिनों से पीछे पड़ा था कि उसे क्रिकेट का एक बैट चाहिए। चौधरी जी, बैट लाकर देने में तो कोई परेशानी नहीं थी पर मैं सब समझ रहा था कि यह चाबी पीछे से उसके दोस्तों ने भरी थी। मैं ठहरा सामान्य सा क्लर्क और उसके साथ में जो दोस्त खेलते हैं उनमें कोई डॉक्टर का, कोई इंजिनियर का तो कोई बिजनेसमैन का बेटा है। वे भी तो बैट खरीद सकते हैं, पर नहीं क्योंकि वे सब हमारे वाले से तेज पड़ते हैं। और तो और हमारी श्रीमती जी भी बेटे के फुल सपोर्ट में रहती हैं। .....बच्चा ही तो है, आज जिद् नहीं करेगा तो कब करेगा। अब श्रीमती जी से कौन जीत सकता है खैर हमने एक नया बैट लाकर दे दिया।

अब आगे सुनो चौधरी जी, कल सामने ग्राउण्ड पर सब बच्चे खेल रहे थे। रविवार का दिन था, मैं और मेरी श्रीमती जी बरामदे में बैठकर चाय का आनन्द ले रहे थे। पत्नी जी अपनी आंखें अखबार के विज्ञापनों पर जमाए हुए थी और हम सामने क्रिकेट देख रहे थे। हमारी आंखे हमारे शहजादे को ढूंढ़ रही थी। हमने चश्मे को साफ करके देखा तो आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। हमारे सुपुत्र को डॉक्टर सुराणा के बेटे ने थर्डमैन की पोजीशन पर लगभग बाउन्ड्री पर तैनात कर रखा था ताकि वह अपने बैट की बार–बार मांग न कर सके। उधर नये बैट का उद्घाटन डॉक्टर सुराणा के बेटे के कर–कमलों द्वारा पहले बैटिंग करके किया जा रहा था। हमने माथा पीट लिया डॉक्टर साहब का बेटा लम्बे लम्बे शॉट लगाकर सबकी परेड करा रहा था और हमारे सुपुत्र तालियां बजाकर और परेड करके ही खुश थे। मैंने पत्नी से कहा....देख लिया इनकी समझ को। इसीलिये हम

मना कर रहे थे बैट लाने के लिये। श्रीमती जी जो अब चावल बीन रही थीं, बिना सर को उठाए बोलीं आप भी क्या बच्चों की बातों पर इतना गौर कर रहे हो। देखो आज अखबार में बिड़ला सभागार में सिल्क की साड़ी की सेल का विज्ञापन आया है, क्या? हम मन मसोसकर रह गये।

चौधरी जी, अब बड़े वाले की कारस्तानी सुनो..... उसकी ऐसी आदत है कि कोई भी कही हुई बात को ध्यान से सुनता ही नहीं और कोई न कोई बवाल पैदा कर ही देता है। आप तो जानते हो चौधरी जी हमने कैसे गरीबी में अपना पेट काटकर इन बच्चों की परवरिश की है और ये हैं कि काम बिगाड़ने और खर्चे कराने में ही विश्वास रखते हैं। पिछले सप्ताह शाम को एक शादी पार्टी में सबको जाना था। सुबह मैं ऑफिस जाने के लिये तैयार हो रहा था, तो बड़ा बेटा आकर बोला पिताजी मैं कैसे आ सकूंगा आज शाम को! मैने कहा क्या समस्या है। वह बोला जो नई पेंट उसे लाकर मैने दी थी उसकी लम्बाई ज्यादा है। पहनकर अच्छी नहीं लग रही है। आप तो जानते हो चौधरी जी कि मुझे थोडी बहुत सिलाई भी आती है। इसलिये मैंने लड़के को समझाया कि चिन्ता मत कर, तू इतना कर देना की अपनी सही लम्बाई की नाप लेकर पैंट के नीचे की तरफ जो ज्यादा कपडा है उसे काट कर रख देना। मैं लौटकर ठीक से सिलाई करके पहनने लायक बना दूंगा। उसने ऐसे सर हिलाया जैसे सब समझ गया है। मुझे उसपर वैसे ही विश्वास नहीं होता इसलिये फिर से एक बार पूछ लिया..... तू ठीक से समझ गया है न कि करना क्या है। वह बोला पिताजी आप कभी तो मुझपर विश्वास किया कीजिए। पहले ही ऑफिस जाने में देर हो रही थी इसलिये उसके पिछले किये गए कांडों पर प्रकाश डालना उचित नहीं समझा और ऑफिस चला गया। शाम को जब घर पहुंचा तो जैसी उम्मीद थी वैसा ही हुआ। दरवाजे पर मुंह लटकाए खड़े साहबजादे के दर्शन मात्र से ही मेरा माथा ठनक गया। सारी थकान उतर गयी। पूछा अब क्या हो गया। उसका जवाब सुनकर गुस्सा तो इतना आया की वहीं पकड़ कर उसकी धुनाई कर दूँ, पर खुद पर नियंत्रण रखते हुए मैने पूछा ऐसा क्या कर दिया? मैंने शर्माजी से पूछा ऐसा क्या हो गया था तो शर्मा जी बोले... चौधरी जी, साहब जादे की पेंट जहां खूंटी पर टंगी हुई थी, ठीक उसके पास उसी रंग की मेरी पेंट भी लटक रही थी उसने खुद की पेंट की जगह मेरी पेंट को नीचे से चार इंच काटकर छोटा कर दिया था। अब चौधरी जी न तो वह और न ही मैं पार्टी में जाने लायक रहे। मेरे सीने पर साँप लोट गया चौधरी जी। जिनके यहां पार्टी थी बाद में मिलने पर उसने भी पार्टी मे न आने का उलाहना दे ही दिया। अब हमारे साहबजादों की काबिलियत को उससे तो बयां नहीं कर सकता था ना।

इस बीच दूसरी चाय भी हम पी चुके थे। मैं समझ नहीं पा रहा था कि उनके दो अनमोल रत्नों की कारगर्दियों पर हंसू या संवेदना व्यक्त करूं। मुझे भी शर्मा जी पर तरस तो आ रहा था पर मैं भी क्या कर सकता था।

व्यंग्य

आप बात नहीं समझे

प्रदीप कुमार चौधरी
सेवानिवृत्त स.ले.प. अधिकारी
शाखा कार्यालय, जयपुर

मै अपना टूर समाप्त करके बस से घर लौट रहा था। सफर लंबा था और मैं काफी दिनों के बाद बस से सफर कर रहा था। पास वाली सीट पर एक महाशय नींद का आनंद ले रहे थे। मैं अपने मोबइल पर फेसबुक की पोस्ट्स और वॉट्सएप पर संदेश पढ़ कर अपना टाइम पास कर रहा था। यही एक मात्र उपाय था समय व्यतीत करने का। साथी यात्री से बात करना सम्भव नहीं था क्योंकि वह शायद थकान के कारण गहरी नींद में सो चुके थे। आंखों पर जब जोर पड़ने लगा तो मैने गाने सुनने का प्रयास किया परन्तु बस के शोर में गाने सुनने में भी परेशानी हो रही थी। अब मैने बाहर की तरफ देखना शुरू कर दिया था। बाहर का मौसम बारिश के कारण सुहाना हो चुका था। यहां यह बताना चाहूंगा कि राजस्थान में वर्षा बहुत कम होती है इसलिये जब कभी वर्षा के कारण मौसम सुहाना होता है तो हर कोई आनंद का अनुभव करता है।

कुछ देर के बाद कहीं मिडवे पर ड्राइवर ने बस को किसी रेस्तरां के सामने रोक दिया। परिचालक ने घोषणा की, कि बस 10 मिनट के लिए यहां रूकेगी, जिसे चाय नाश्ता करना हो वह कर सकता है। बैठे–बैठे कमर और पैर अकड़ चुके थे तो मैं थोड़ा घूमकर थकान मिटाना चाहता था। आप तो जानते हैं कि ऑडिट करने वाले चाय के शौकीन होते हैं। इसलिए मैने भी चहलकदमी करते हुए एक कप चाय पी और फिर से बस में आकर बैठ गया। मेरा सहयात्री भी अपना स्थान ग्रहण कर चुका था। बस रवाना हो चुकी थी। मैंने शायद सुहाने मौसम के असर से उत्साहित होते हुए पास बैठे यात्री से कहा कि आज तो मौसम अच्छा हो गया है, इस तरफ वर्षा भी अच्छी हुई है। मुझे लगा कि यह कहकर जैसे हमसे कोई अपराध हो गया था। जैसे ही सहयात्री ने यह सुना तो मेरे कान के पास अपना मुंह लाकर जोर से बोला ..... कम बारिश के लिए जिम्मेदार कौन है बताइये? क्या हम दोषी नहीं हैं.....बात नहीं समझे....हमने उनकी बात से सहमति जताते हुए हाँ में सर हिला दिया।

हमें लगा कि हमसे कोई बड़ा गुनाह हो गया है। उन्होंने अपना गला खंगारते हुए साफ किया ताकि उनकी आवाज हमें और भी स्पष्ट सुनाई दे सके। फिर वह जोर से बोले इंसान ने जंगल काट दिए। आज सड़कों पर वाहनों की संख्या देखो कितनी तेज गति से लगातार बढ़ रही है। वायु प्रदूषण इनकी वजह से कितना बढ़ गया है। बात नहीं समझे। बात नहीं समझे उनका तकिया कलाम था। पर वह कान के पास बार–बार जब बोलते तो लगता कि हम कोई अपराधी हैं। फिर से उन्होंने हमें समझाना शुरू किया..... आज आप और हम दिखावे के लिए वाहन खरीद लेते हैं। वाहन खरीदने के लिए लोन भी आसानी से मिल जाता है। पहले सब लोग कितना पैदल चलते थे, न कोई प्रदूषण था न कोई बीमारी..... बात नहीं समझे। उनकी बात तो सही थी पर हम उस क्षण को कोस रहे थे जब हमने उनसे बातचीत शुरू की थी। जब उन्होने कई बार यह तकिया कलाम हम पर फेंक दिया कि बात नहीं समझे तो एक बार तो हमें भी लगने लगा कि वास्तव में हम समझ पा रहे हैं कि नहीं। अपनी बुद्धि पर हमें शक होने लगा। अब तो जनाब हमारे सब्र का बांध भी

टूटने लगा था। सोचा यदि इन महाशय को अपने ज्ञान से परिचित न कराया तो हमारे गन्तव्य के आते आते यह तो हमें निपट गंवार साबित कर देंगे और इनका तकिया कलाम अंत तक हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा, तो अपनी खिसियाहट पर काबू रखते हुए हमने कहा..... सिर्फ जंगल काटना या वाहनो की संख्या ही तो प्रदूषण का कारण नहीं है, और भी कई कारण हैं जैसे फैक्ट्रियों का प्रदूषण, प्लास्टिक, खन्न आदि। आप इन सबके लिये हम भारतीयों को ही जिम्मेदार कैसे ठहरा सकते हैं। क्या आपको पता है कि औद्योगिक क्रांति की शुरूआत यूरोपीय देशों में सबसे पहले हुई थी और वे सारे मुल्क ही सबसे ज्यादा हर तरह के प्रदूषण के लिए जिम्मेंदार हैं और दुनिया में प्रदूषण का ढिंढोरा पीट रहे हैं। सारे उद्योग धंधे बड़े पैमाने पर वहीं से शुरू हुए थें और जब उनके यहां की आबोहवा उनसे नियंत्रित नहीं हो सकी तो सारी दुनिया में प्रदूषण–प्रदूषण का हंगामा खड़ा कर दिया। अब यह जनाब मेरे मुंह की तरफ ऐसे ताक रहे थे जैसे उनका पाला किसी बड़े विद्वान से पड़ गया हो। लोहा गरम देखकर हमने एक आखरी चोट और कर दी।

हमने कहा आप यह बताइये कि हम इस प्रदूषण जैसे विषय पर आपस में बहस करने के अलावा और करते ही क्या हैं। हम अपने मोहल्ले में कचरे तक का प्रबंधन नहीं कर पाते। कचरा लेने रोज गाड़ियां आती हैं, फिर भी पॉलिथिन इधर–उधर बिखरी पड़ी रहती हैं। न हम पेड़–पौधे लगाते हैं और न ही उनका संरक्षण करते हैं, फिर किस मुंह से लोगों को दोष देते रहते हैं। शुरुआत तो हमें स्वयं से ही करनी पड़ेगी, अपने मोहल्ले को साफ रखकर। इधर–उधर कचरा न फेंक कर और देखो सरकार तो बहुत कुछ कर रही है। बिना हमारे सहयोग से बात नहीं बन सकती। हम सबको सामुहिक प्रयास करने होंगे, तभी तो परिणाम दिखाई देंगे। अब सोचने की बारी उनकी थी और वह यात्रा समाप्ति तक सोचते ही रहे, हमारी बातों पर मंथन करते रहे। हमारी बातों का असर उनके तकिया कलाम पर भारी पड़ा था ऐसा प्रतीत हुआ और हमारा आगे का सफर शांति से कट गया।

संस्कार

आनंद कुमार सिंह
स.ले.प. अधिकारी,
शाखा कार्यालय, मुंबई

संस्कार हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अच्छे संस्कार से ही मानव जीवन के लिए उत्तम चरित्र का निर्माण होता है जिससे व्यक्ति विकास के पथ पर प्रगतिशील होता है। मनुष्य को सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मान दिलाने हेतु संस्कारों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। संस्कार के बीज एक बच्चे में उसके परिवार के द्वारा डाले जाते हैं जो समय के साथ–साथ उसके व्यक्तित्व के विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। जब बच्चा परिवार दवारा दिए गए संस्कारों के साथ समाज में कदम रखता है तो उन संस्कारों के माध्यम से अपनी पहचान स्थापित करता है। यदि बच्चा परिवार और समाज से अच्छे संस्कारों को ग्रहण करता है तो आने वाले समय में एक योग्य, प्रतिभावान और अच्छे व्यक्ति के रूप में स्वयं को सिद्ध करता है। एक बच्चे को अच्छे संस्कार प्रदान करने का उत्तरदायित्व परिवार के साथ–साथ समाज का भी है। अच्छे और बुरे संस्कार समाज को प्रभावित करते हैं। बच्चा, जब शिक्षा ग्रहण करने हेतु विद्यालय जाता है तो शिक्षकों का यह उत्तरदायित्व है कि उसे अच्छी शिक्षा के साथ–साथ अच्छे संस्कार भी सिखाएं और जीवन में अच्छे संस्कारों के महत्त्व को भी बताएं। बदलते परिवेश में अच्छे संस्कारों की भूमिका और अधिक बढ़ गई है। संस्कार व्यवहार की दिशा को निर्धारित करते हैं। व्यवहार को उत्तम बनाने में अच्छे संस्कारों की भूमिका बहुत अधिक है।

आज के समाज में जहाँ अच्छे संस्कार बच्चों को बोझ लगने लगे हैं और ग्रहण करने में बच्चे स्वयं को सहज नहीं कर पा रहे हैं तो ऐसी स्थिति में परिवार और समाज की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। परिवार और समाज को चाहिये कि वे बच्चों के लिए एक उचित वातावरण के निर्माण के साथ–साथ अच्छे संस्कारों की सीख भी प्रदान करें। अच्छे संस्कार से व्यक्ति के अन्दर दूसरों के सम्मान की भावना विकसित होती है। जिसके फलस्वरूप वह भी समाज में सम्मान प्राप्त करता है। अच्छे संस्कार व्यक्ति को अच्छे कार्यों हेतु प्रेरित करते हैं जिससे समाज के उचित विकास में सहयोग मिलता है और समाज को अच्छे कार्यों के फलस्वरूप प्रभावशाली वातावरण प्राप्त होता है। अच्छे संस्कार व्यक्ति को सबके विकास के लिए कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं जिससे उसमें भलाई के कार्य करने के प्रति रूचि जागृत होती है। व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि उसके संस्कार ही सबसे बड़ी पूंजी हैं जिन्हें वह आने वाली पीढ़ी को उचित रूप में सौंप सकता है। व्यक्ति के चरित्र से उसके संस्कारों का पता चलता है। संस्कार बाजार से खरीदी जाने वाली वस्तु नहीं है बल्कि यह परिवार, समाज और अच्छे शिक्षकों द्वारा प्रदान किया जाता हैं। इसलिए अच्छे संस्कारों के लिए परिवार, समाज और शिक्षकों का उत्तरदायित्व बहुत अधिक है।

अच्छे वातावरण को विकसित करने के लिए व्यक्ति में अच्छे संस्कारों का होना अत्यंत आवश्यक है। अच्छे संस्कार ही हैं जो व्यक्ति को चरित्रवान बनाते हैं तथा समाज में उसके व्यवहार को सुलभ बनाते हैं। व्यक्ति के अच्छे संस्कार उसके चरित्र को प्रकाशित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। अतः जीवन को सार्थकता प्रदान करने के लिए और इसके प्रभाव को स्थापित करने के लिए अच्छे संस्कारों का होना अत्यंत आवश्यक है।

पर मंजिल यह नहीं

पवन मिश्रा
स.ले.प. अधिकारी
शाखा कार्यालय, मुंबई

जो मिला, यह है रास्ता, पर मंजिल यह नहीं
ख्वाहिशें, उस दरिया की, जहां साहिल ही नहीं
जब पर्वतों को हो लांघना,
फिर ठोकरों से क्या गिला।
कूचे से जब बाहर चले
तो बन गया यह काफिला।।
मुमकिन है क्या, बस यह बता, भले मुश्किल ही सही
ख्वाहिशें...
बदली जुबां है, जज्बात नहीं
अब काटों की औकात नहीं।
हर बेबसी पर कर फतेह
ऊंचे हम हैं हालात नहीं।।
है आज जहां इस पे न जा, मुस्तकबिल यह नहीं
ख्वाहिशें....
जो मिला, यह है रास्ता, पर मंजिल यह नहीं
ख्वाहिशें, उस दरिया की, जहां साहिल ही नहीं

डिजिटल टेक्स्ट की लोकप्रियता

गीता मेहता
हिंदी अधिकारी
केंद्रीय कार्यलय

डिजिटलाइजेशन के इस युग में हम जो पढ़ते हैं, उसका दायरा छपी हुई किताबों तक सीमित नहीं है। हमारी पढ़ाई का एक बहुत बड़ा हिस्सा डिजिटल टेक्स्ट का भी है। डिजिटल टेक्स्ट हमारी आदत में शामिल हुआ है।

लोगो को जरूरत थी खुद को अभिव्यक्त करने के लिए एक अदद प्लेटफॉर्म की, जिसे फेसबुक ने उपलब्ध कराया। इसके पहले ब्लॉग ने सीमित संख्या में ही सही, डिजिटली पढ़ने लिखने की अलख तो जगाई थी, लेकिन फेसबुक ने जब से अपनी पोस्ट में शब्द संख्या की सीमा खत्म कर दी, तब से ब्लॉग पृष्ठभूमि में चले गए और एक बहुत बड़ा वर्ग इस लोकप्रिय डिजिटल स्लेट पर अपने विचार प्रस्तुत करने लगा। इससे भारतीय भाषाओं में शिथिल पड़ रही ई–बुक इंडस्ट्री में नई जान आई। प्रकाशकों ने नोट किया कि हिंदी भाषी क्षेत्र में भी लोग डिजिटल रीडिंग के लिए तैयार हो रहे हैं। नतीजतन उन्होंने अपने वेबसाइट नए सिरे से अपडेट किए तथा प्रिंट के साथ पुस्तकों के ई–संस्करण कैटलॉग में शामिल किए जाने लगे।

डिजिटल टेक्स्ट की लोकप्रियता बढ़ने का एक अच्छा नतीजा यह भी आया कि पारम्परिक पढ़ने वालों को वे लेखक भी मिले, जिन्हें प्रिंट की दुनिया बरसों बरस सही से पहचानने के लिए तैयार नहीं थी। आज लेखक की पहचान प्रिंट और डिजिटल दोनों दुनियाओं में बढ़ रही है। उसका रीडर बेस बढ़ा है। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि उसके टेक्स्ट को पढ़नेवाले लोग बदल रहे हैं। ये नए माध्यमों से जुड़े हुए पाठक हैं। इस माध्यम से पढ़ने वालों के पास अपनी सहूलियत के हिसाब से किताब कैरी करने के लिए अब कई ऐप हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाले समय में निश्चित रूप से डिजिटल टेक्स्ट की दुनिया, बदलेगी, पर इसका मतलब यह नहीं है कि किताबों का महत्व कम हो जायेगा। किताबें अपने भौतिक स्वरूप से लेकर डिजिटल स्वरूप तक हर रूप में कायम रहेंगी और लेखकों का किताबों का सपना धूमिल नहीं होगा क्योंकि हर लिखनेवाले की चाहत एक अलग किताब की होती है। किताब जिसे प्रकाशक छापें, पाठक खरीदकर पढ़ें और वह बैस्टसेलर में शुमार हो। लेकिन लिखने से छपने तक की यात्रा हर किसी के लिए सुगम नहीं।

कथा–लेखन की दुनिया में धूम मचाने वाले स्टीफन किंग के बारे में हर लिखनेवाला जानता है। बुकर से सम्मानित मार्गेट ऐटवुड की किताब दुनिया की तमाम भाषाओं में अनूदित है। लेकिन वास्तविकता यह है कि इन लेखकों की पहली किताब कोई छापना नहीं चाहता था इन्होंने दर–दर इंकार सुनने के बाद अपनी आरम्भिक किताबें खुद प्रकाशित की। इसे 'सेल्फ पब्लिशिंग' (स्वयं प्रकाशन) कहा जाता है। इनकी किताबों को लोगों ने हाथों–हाथ लिया और फिर प्रकाशकों की निगाह में ये ऐसे चढ़े कि हर बड़ा प्रकाशक इनकी किताबें छापने की होड़ करने लगेगा।

वास्तविकता यह है कि किताब अपने मौलिक कंटेंट, उम्दा भाषिक बर्ताव और नये दृष्टिकोण की वजह से ही पाठकों को पसंद आती और बिकती है।

बुढ़ापा

नंदिनी दत्ता रॉय
सहायक पर्यवेक्षक
केंद्रीय कार्यालय

अरे बुढ़ापा से मत डर मानव
यह जीवन का सत्य है,
बुढ़ापा जीवन का आइना है
जो हमें अपने जीवन की सीख देता है।
बचपन चंचलता की मिसाल,
जवानी कर्मठता की सत्यता।
बुढ़ापा जीवन की शान्ति
जो जीवन की सार्थकता बताता।
ईश्वर का गणित बहुत कठोर है साधु,
जवानी के कर्मों का हिसाब ही
बुढ़ापे की पूँजी है साधु।
इसलिये, बुढ़ापे से न डर
ईश्वर ने बचपन के पश्चात् ही
पचपन के सम्मुख किया।
जीवन की भागदौड़, सुख-सुविधा,
एशो-आराम के लिये।
लगभग तीस वर्ष का समय
प्रदान किया,
तो समय का सदुपयोग कर।
आज के आनन्द को भोग,
और कल को संवारने का भी प्रयत्न कर।
क्योंकि बुढ़ापा जीवन का अटूट सत्य है,
बुढ़ापे से मत डर मानव

उम्रदराज

गीता रानी
वरिष्ठ निजी सहायक,
केन्द्रीय कार्यालय

देखा एक दिन यूंही बैठे
दो उम्रदराज चेहरों को
कदम ठिठक गये

करीब से थोड़ा झुक कर
प्रणाम किया तो सौ-सौ
किस्से उनके चेहरों से
बयां हो गये

माथे की एक-एक झुर्री
जीवन का एक-एक अनुभव
बयान कर रही थी

गालों पर छाई झुर्रियां
एक-एक पल का हिसाब
कर रही थी

आंखों में झांका तो पाया
कि पूरे जीवन की जद्दोजहद
अपनी ही कहानी कह रही है
जब प्रणाम कर उठी तो
पूरे चेहरे पर अजीब सा
नूर झलक रहा था

सुकून सुकून सुकून
ही पूरे व्यक्तित्व में अपना
वर्चस्व बयान कर रहा था।

कांपते हाथ जब आशीर्वाद
के लिये उठे तो
मेरा रोम-रोम भी आनंदित
हो गया
वो उम्रदराज चेहरे दिखें
ये देखने को रोज
मेरी आँखें खोजने में लग जाती हैं

जिस दिन मिल जाते हैं
वो दिन सुकून से भर जाता है।
जीवन की शाम से भी
रात की तरफ जाती उनकी जिंदगी
मुझे जिंदगी के कई पाठ पढ़ा जाती है।

दोस्त

नवीन कुमार
एम.टी.एस.,
शाखा कार्यालय, कटक

कभी पिता बनकर जो हमारी गलती पर डाँटता है,
कभी मां बनकर जो हमारी गलती पर समझाता है,
वो "दोस्त" होता है।
कभी अमीरी-गरीबी जो नही देखता है,
प्रेम और व्याग के धागे से जो जुड़ा होता है,
वो "दोस्त" होता है।
बिना बताये जो हर बात समझ लेता है,
जिससे हम कोई भी राज छिपा नही सकते हैं,
वो "दोस्त" होता है।
कभी हमें जो बिना मतलब के सताता है,
कभी हमें जो उदास होने पर हंसाता है,
वो "दोस्त" होता है।
खुशी के मौके पर जो जाम से जाम टकराता है,
दुख की घड़ी में जो चट्टान बनकर खड़ा रहता है,
वो "दोस्त" होता है।
कभी हमारे कारण जो गालियां खाता है,
कभी हमें जो गालियां खिलवाता है,
वो "दोस्त" होता है।
समय के साथ जो नही बदलता है,
उम्र भर जो साथ देता है,
वो "दोस्त" होता है।

किस्मत से जो मिलता है,
जिसके मिलने से जीवन जन्नत बन जाता है,
वो "दोस्त" होता है।
अपना साया भी जब साथ छोड़ देता है,
उस समय जो साथ देता है,
वो "दोस्त" होता है।
माता-पिता के बाद अगर किसी पर,
आप विश्वास कर सकते हैं,
वो "दोस्त" होता है।
दोस्त अनमोल होता है।

जल संरक्षण: नवीन विचार एवं पहल

सारः जल संरक्षण तथा संसाधन प्रबंधन संबंधी जागरुकता जनसामान्य के लिए अत्यावश्यक है जिससे हम अपना आज और सुरक्षित कल सुनिश्चित कर सकते हैं। इस अद्वितीय सम्पदा को संरक्षित करने हेतु बहु–प्रयासों में से एक स्मार्ट जल संरक्षण व्यवस्था है। इस विचार की पहल करते हुए आने वाला समय समसामयिक तकनीक का प्रयोग कर बहुआयामी तरीके से संरक्षित रख सकता है।

सीमा कुमारी
कनिष्ठ अनुवादक,
शाखा कार्यालय, अहमदाबाद

"जल है तो जीवन है, जल से सुरक्षित हमारा आज और सुनिश्चित कल है।" – डी. डी. न्यूज

जल प्रकृति की अनमोल धरोहर है। बिना पानी के जीवन संभव नहीं है। पीने के लिए शुद्ध जल अत्यावश्यक है क्योंकि स्वच्छ एवं सुरक्षित जल अच्छे स्वास्थ की कुंजी है। यह ज्ञातव्य है कि धरती का दो तिहाई हिस्सा पानी से भरा है जिसमें पीने योग्य शुद्ध जल पृथ्वी पर उपलब्ध जल का मात्र एक प्रतिशत हिस्सा ही है। ऐसे में आवश्यकता है कि सभी पानी की कीमत समझें। यदि जल व्यर्थ बहेगा तो भावी पीढ़ी के लिए जल की कमी महासंकट बन जाएगी।

कह सकते हैं कि 20वीं सदी में जो स्थिति तेल की थी 21वीं सदी में वही स्थिति पानी के साथ है। यह सुनना थोड़ा अजीब लग सकता है परंतु आज के वर्तमान समय का ही अवलोकन करें तो देश के कई राज्य जलापूर्ति के अभाव से जूझ रहे हैं। एक घड़ा शुद्ध पेय जल के लिए लोगों को मीलों भटकना पड़ता रहा है। जल–टैंकर तथा ट्रेन से भी जल प्राप्त करने के लिए घंटों कतार में खड़ा रहना पड़ता रहा है। रोजमर्रा के कामकाज, नहाने, कपड़े धोने, खाना बनाने, बरतन साफ करने, उदयोग धंधा चलाने के लिए जो जल चाहिए वह कहाँ से लाया जाए जैसी समस्या जलाभाव के कारण बढ़ रही है क्योंकि नदी, तालाब, ट्यूबवेल, हैंडपंप, कुएँ, बावरियाँ सूखते जा रहे हैं। मनुष्य ही नहीं पशु पक्षियों को भी पानी के लिए दर–दर भटकना पड़ रहा है। पेड़–पौधे सूख रहे हैं, कल–कारखाने बंद हो रहे हैं जिससे बेरोजगारी की समस्या भी बढ़ती जा रही है। खेती बाड़ी चौपट हो रही है। जल संकट हमारे दैनिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। कहा जा सकता है कि प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जल का अपव्यय, जल संचयन में कमी और हमारी लापरवाहियों के कारण ही यह समस्या उपजी है।

इन समस्याओं को देखते हुए इससे निजात पाने हेतु सरकार द्वारा कई परियोजनायें जैसे मिशन अमृत महोत्सव, जल जीवन मिशन, नमामि गंगे, जल संचारण का सुधार जल संवर्धन कार्यक्रम, जल संरक्षण अभियान तो चलाए ही जा रहे हैं परंतु इसके लिये केवल सरकारी पहल को ही पर्याप्त माना जाये तथा समस्या का समाधान हो जाये। जल संरक्षण के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी बनती है अतः इसके लिए आवश्यक है कि जनभागीदारी भी सुनिश्चित की जाए।

''साथी हाथ बढ़ाना एक अकेला थक जाएगा मिल कर बोझ उठाना",

इस कथनी को हमें अपनी करनी में भी चरितार्थ करना होगा। इस संदर्भ में वर्तमान में कई सारे ऐसे नवीन विचारों की पहल की जा रही है जिससे एक लंबे समय तक इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है जिसमें से एक स्मार्ट जल संरक्षण व्यवस्था है जिसमें सेंसर तकनीक का उपयोग कर जल स्रोतों की निगरानी रखी जाती है। यह व्यवस्था समय पर जल आपूर्ति को नियंत्रित करने में मदद करती है और व्यय को कम करती है। इसी के साथ अपशिष्ट जल उपचार भी एक पद्धति है, पिछले कुछ वर्षों में भूजल तालिका में तेजी से गिरावट देखी गई है। अतः इसके

विकल्प में अपशिष्ट जल उपचार ने जोर पकड़ा है जिसमें भारत, राष्ट्र में उत्पादित अपशिष्ट जल की कुल मात्रा का 37% उपचार करता है। आमतौर पर लोगों को लगता है कि वे कम से कम पानी का उपभोग करते हैं, स्मार्ट मीटर एक ऐसी पद्धति है जो पानी के उपयोग के पैटर्न को समझता है और लोगों को निश्चित मात्रा में उपयोग करने का संकेत देता है। यह आवंटन, प्रबंधन और जल प्रशासन के प्रभावों को बढ़ाता है। जल वितरण को कुशलतापूर्वक संभालने के लिए चंडीगढ़ और पुणे जैसे शहर स्मार्ट मीटर आधारित प्रणाली में स्थानांतरित हो गए हैं। पिछले 3 वर्षों में पुणे नगर–निगम ने 2,75,000 स्मार्ट वॉटर मीटर स्थापित किए है। इसके अतिरिक्त ये मीटर व्यक्तियों को पानी का सही उपयोग करने में सक्षम बनाते हैं। इसके अलावा विशाल स्थानों को प्रभावी ढ़ंग से और स्थायी रूप से ठंडा करने के लिए यह एक व्यवहार्य वैकल्पिक तकनीक बन गई है। इसमें एचवीएसी अनुप्रयोगों को स्मार्ट जल संसाधनों का उपयोग करके सरल बनाया जाता है फिर इसमें तरल की बदलती गति, प्रवाह और तापमान को समायोजित किया जाता है। राजकोट भारत का ऐसा पहला शहर है जहॉ डिस्ट्रिक्ट कूलिंग को नियोजित करने की व्यवस्था की गई है। इसके लिए पानी तथा ऊर्जा काफी बचत की गई। ठाणे तथा अमरावती जैसे कई अन्य शहर जल शीतलन स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त स्थायी जल और अपशिष्ट जल उपचार के लिए एकीकृत दृष्टिकोण का उपयोग अपने आप में अनूठा है। यह विभिन्न उपयोगों के लिए जल संसाधनों के बेहतर प्रबंधन को प्रोत्साहित करता है। यह एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करता है जो हितधारक की भागीदारी को बढ़ावा देता है और शहरों में जल अवसंरचना पहलों के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी को भी बढ़ावा देता है। एशिया की सबसे बड़ी ग्रीनफील्ड परियोजना गुजरात की धोलेरा स्मार्ट सिटी परियोजना है जो अहमदाबाद तथा भावनगर को इसी पद्धति से जोड़ने का कार्य कर रही है।

अतः जल संरक्षण केवल सरकार का नहीं बल्कि जनसमान्य का भी उत्तरदायित्व है। सतत जल और अपशिष्ट जल प्रबंधन शहरों व गावों में वहाँ के लोगों और हितधारकों पर निर्भर करता है। बेहतर जल संसाधन प्रबंधन के लिए हर एक को जल संरक्षण के प्रति जागरुक, सतत प्रयास और नए वैकल्पिक तरीकों पर ध्यान देना अत्यावश्यक है। तभी हम अपने तथा भावी पीढ़ी के लिए एक सुनिश्चित कल का निर्माण कर पाएंगे क्योंकि "जल विलासिता नहीं बल्कि आवश्यकता है।"

"जल ही जीवन है"

हर बूंद कीमती है।

इन्तजार

पंकज मोहन जायसवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
शाखा कार्यालय, लखनऊ

''अरे लक्ष्मी आज मन कुछ अजीब सा हो रहा है'' – शुक्ला जी ने सिगरेट के धुंयें को हवा में छोड़ते हुए अपनी पत्नी से कहा। शुक्ला जी को लोग आर. एन. शुक्ला के नाम से जानते थे हालांकि उनका नाम रामनाथ शुक्ला था जो कि सिर्फ सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होता था। शुक्ला जी भेल जैसी नवरत्न कंपनी से रिटायर्ड थे और दिल्ली के एक पॉश इलाके में 3 बीएचके फ्लैट में पत्नी के साथ रहते थे। हाथों की सिलवटों और चेहरे की झुर्रियों से यह अनुमान लगाना कठिन न था कि शुक्ला जी ने अब तक 70 बसंत देख लिए होंगे। जिंदगी के इस पड़ाव पर आने के बाद भी दो चीजों का साथ शुक्ला जी ने नहीं छोड़ा था या यूं कह लीजिए कि इन्हीं दो चीजों ने शुक्ला जी का साथ नहीं छोड़ा था। एक तो इनकी धर्मपत्नी लक्ष्मी थी और दूसरी इनकी युवावस्था से साथी सिगरेट थी। सिगरेट से गहरी दोस्ती का कारण यह था कि शुक्ला जी हकीकत में विश्वास रखते थे, कल्पनाओं और कहानियों में उन्हें ज्यादा दिलचस्पी न थी। इंजीनियरिंग के विद्यार्थी होने के समय जब उन्हें ज्यादा मानसिक तनाव होता था तो वह एक सिगरेट सुलगा लेते थे और अपनी परेशानियों को एक पल में धुंयें में उड़ता हुआ देखते थे। बस तभी से अपनी परेशानियों और समस्याओं को धुएं में उड़ाना उनकी जिंदगी का हिस्सा बन गया। अब इसे संयोग कहे या कुछ और न परेशानियों ने शुक्ला जी का साथ छोड़ा और न शुक्ला जी ने सिगरेट का। अपनी पत्नी के कैंसर के इलाज से लेकर अपने पैर के फ्रैक्चर का ऑपरेशन कराने के समय अगर किसी ने पूरी शिद्दत से शुक्ला जी का साथ दिया था तो वो सिगरेट और उनकी पत्नी ही थीं।

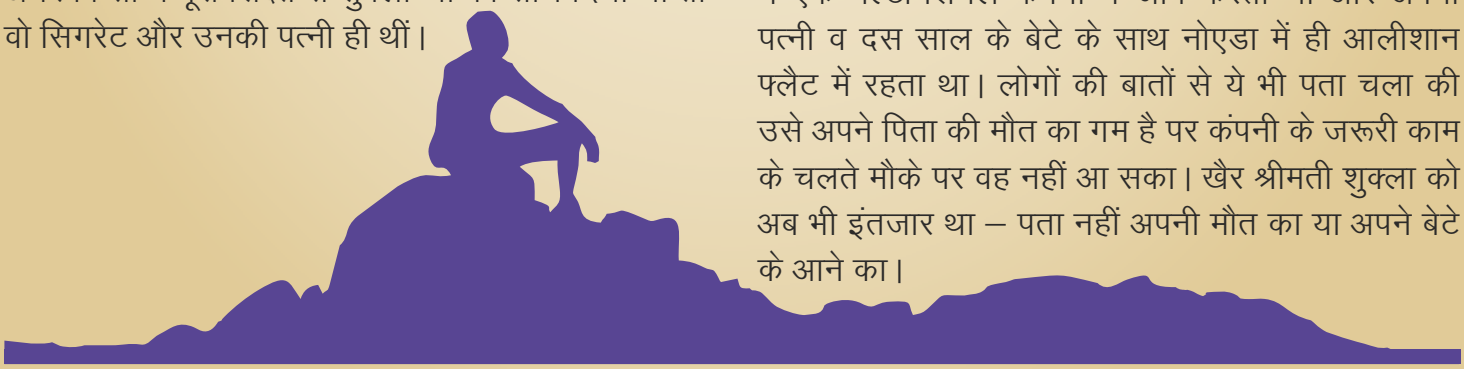

हालांकि आज सिगरेट के कश से जब उनकी बेचैनी का समाधान न हुआ तो उन्होंने अपनी पत्नी को आवाज लगाई थी। जिस उम्र में श्रीमती शुक्ला के हाथ में पोते पोतियों को होना चाहिए था उस उम्र में वह अपने पति के लिए अपने हाथों में गरम–गरम चाय लेकर हाजिर थी। क्या हुआ ऐसी कौन सी बात है जो मन अजीब हो रहा आपका? श्रीमती शुक्ला ने चाय का प्याला शुक्ला जी के हाथ में थमाते हुए पूछा। पता नहीं, हमारा बेटा मेरी अर्थी को कंधा देने आएगा या वह भी तुम्हें ही उठानी पड़ेगी। शुक्ला जी की यह बात सुनकर श्रीमती शुक्ला की आंख से आंसू बहने लगे। खैर मौके की नजाकत को देखते हुए शुक्ला जी पूरी ताकत से श्रीमती शुक्ला को अपनी बाहों में भरकर बोले – मुझे पूरा भरोसा है कि वह जरूर आएगा। खैर, अभी एक ही हफ्ता बीता था कि पता चला शुक्ला जी ने सिगरेट और पत्नी के साथ–साथ दुनिया का भी साथ छोड़ दिया है। कुछ मोहल्ले वालों ने मिलकर हिन्दू रीति–रिवाज से उनका अंतिम संस्कार कर दिया। वहीं लोगों की बातों से पता चला कि उनका इकलौता बेटा दिल्ली से कुछ दूरी पर स्थित नोएडा में एक मल्टीनेशनल कंपनी में जॉब करता था और अपनी पत्नी व दस साल के बेटे के साथ नोएडा में ही आलीशान फ्लैट में रहता था। लोगों की बातों से ये भी पता चला की उसे अपने पिता की मौत का गम है पर कंपनी के जरूरी काम के चलते मौके पर वह नहीं आ सका। खैर श्रीमती शुक्ला को अब भी इंतजार था – पता नहीं अपनी मौत का या अपने बेटे के आने का।

किसान अन्नदाता या भाग्य विधाता

नवीन कुमार मोरल
लिपिक
केन्द्रीय कार्यालय

भारत की पहचान एक कृषि प्रधान देश के रूप में रही है लेकिन देश के बहुत से किसान बेहाल हैं। खाद्य और कृषि संगठन द्वारा 1970 से 2001 तक लगभग 30 वर्षों में भारत की कृषि वृद्धि के विश्लेषण ने भारतीय कृषि में प्रणाली गत समस्याओं की पहचान की। खाद्य स्टेपल के लिए, छह वर्षीय खण्डों 1970–76, 1976–82, 1988–1994 और 1994–2000 के दौरान उत्पादन में वार्षिक वृद्धि दर क्रमशः 2.5, 2.5, 3.0, 2.6 और 1.8 फीसदी प्रति वर्ष पाई गई। कुल कृषि उत्पादन के सूचकांक के लिए अनुरूप विश्लेषण एक समान पैटर्न दिखाता है, जिसमें 1994–2000 की विकास दर केवल 1.5 फीसदी प्रति वर्ष है। उपरोक्त वर्णित मूल्यांकन से यह बात सिद्ध होती है कि कृषि अपेक्षानुरूप विकास प्राप्त नही कर सकी है।

यह तो सर्वविदित है कि भारत संरचनात्मक दृष्टि से गावों का देश है और सभी ग्रामीण समुदाय अधिक मात्रा में कृषि कार्य करते हैं इसीलिए भारत को कृषि प्रधान देश की संज्ञा दी जाती है। लगभग 70 फीसदी भारतीय लोग किसान हैं और अर्थव्यवस्था में रीढ़ की हड्डी माने जाते हैं। वे वाणिज्यिक फसलों के उत्पाद और तिलहन का उत्पादन करते हैं। वे हमारे उद्योगों के लिए कुछ कच्चे माल का उत्पादन करते हैं इसीलिए वे हमारे राष्ट्र के जीवन रक्त हैं। भारत में लगभग 60 फीसदी कृषि पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से निर्भर भारतीय किसान पूरे दिन–रात काम करते हैं। वे बीज बोते हैं और रात में फसलों की रखवाली भी करते हैं।

अब सबसे बड़ी समस्या किसानों के आत्महत्या करने की है। भारत में किसान की आत्महत्या की यह स्थिति 1990 के बाद पैदा हुई जिसमें प्रति वर्ष दस हजार से अधिक किसानों के द्वारा आत्महत्या की रिपोर्ट दर्ज की गयी। 1997

से 2006 के बीच 166304 किसानों ने आत्महत्या की। भारतीय कृषि बहुत हद तक मानसून पर निर्भर है तथा मानसून की विफलता के कारण नकदी फसलें नष्ट हुई इसका सीधा प्रभाव किसानों पर पड़ा। किसान इस स्थिति का सामना नही कर सके तथा आत्महत्या करने पर मजबूर हुये। आत्महत्याओं का मुख्य कारण मानसून की विफलता, सूखा, कीमतों में वृद्धि, ऋण का अत्याधिक बोझ आदि परिस्थितियाँ समस्याओं के एक चक्र की शुरूआत करती हैं। बैंकों, महाजनों, बिचौलियों आदि के चक्र में फंसकर भारत के विभिन्न हिस्सों के किसानों ने आत्महत्या की है। 1990 में प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार 'द हिंदू' ने सर्वप्रथम किसानों की आत्महत्याओं के बारे में बताया। आरंभ में ये रिपोर्ट महाराष्ट्र से आई। जल्दी ही आंध्र प्रदेश से भी आत्महत्याओं की खबरे आने लगी।

पहले–पहले तो कयास लगाया जाने लगा कि अधिकांश आत्महत्याएं महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के कपास उत्पादक किसानों ने की है। लेकिन महाराष्ट्र के राज्य अपराध लेखा कार्यालय से प्राप्त आंकड़ों को देखने से स्पष्ट हो गया कि पूरे महाराष्ट्र में कपास सहित अन्य नकदी फसलों के किसानों की आत्महत्याओं की दर बहुत अधिक रही है।

आत्महत्या करने वाले केवल छोटी जाति वाले किसान नही थे बल्कि मध्यम और बड़ी जाति वाले किसान भी थे। राज्य सरकार ने इस समस्या पर विचार करने के लिए कई जांच समितियां बनाई। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने राज्य सरकार द्वारा विदर्भ के किसानों पर व्यय करने के लिए 110 अरब रूपये के अनुदान की घोषणा की जो ऊंट के मुहं में जीरा साबित हुआ। बाद के वर्षों में कृषि संकट के कारण महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी किसानों ने आत्म हत्याएं की।

सरकारी अनुदान–सहयोग भी किसानों की समस्या का समाधान नहीं कर पाये। समय–समय पर बदलती राजनीति धरती के लाल व माटी का शेर कहे जाने वालों के घाव पर मरहम नही लगा पाई है। अगर अनुदान देने व कर्ज–माफी की राजनीतिक सोच को आगे लाकर देखे तो पता चलता है कि हमारे जनप्रतिनिधि सिर्फ अपनी राजनीति चमकाने के अलावा कुछ नहीं करते। राष्ट्रीय अपराध लेखा कार्यालय के आंकड़ों के अनुसार भारत भर में 2008 में लगभग सोलह हजार किसानों ने आत्महत्याएं की। अब हम कैसे कह सकते हैं कि सरकारी–सहायता ने किसानों की समस्या का निवारण किया। समय–समय पर दिया जाने वाला चंदा किसानों के लिए ग्रहण ही साबित हुआ। सरकारी सहायता का पैसा या तो बिचौलिये खा गये या फिर बैंक हड़प कर गये। भारत में धनी और विकसित कहे जाने वाले महाराष्ट्र में अब तक आत्म हत्याओं का आँकड़ा 50 हजार के पार पहुंच चुका है।

आँकड़ें बताते हैं कि 2004 के पश्चात स्थिति बद से बदतर होती चली गई। 1991 और 2001 की जनगणना के आँकड़ों को तुलनात्मक देखा जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि किसानो की संख्या कम होती चली गई है। 2001 की जनगणना के आँकड़ें बताते हैं कि पिछले दस वर्षों में 70 लाख किसानों ने खेती करनी बंद कर दी।

अब मन में यह प्रश्न उठता है कि किसान जो कि अन्नदाता है, वह भाग्य विधाता कैसे हुआ? सारी दुनिया का पेट भरने वाला किसान, जो कि धरती से जुड़ा होता है, अभी भी अपने संघर्ष को जारी रखे हुए है। बीते दिनों में किसान आत्महत्याओं ने जोर पकड़ा है। लेकिन किसान इस बात से हतोत्साहित नही हुआ बल्कि भले उसने मेहनत के दम पर उसी जोत में ज्यादा उत्पादन हासिल किया है। सन नब्बे के दशक का दौर हो या 21वीं सदी का शुरूआती दशक, किसानों को लेकर राजनीति हमेशा की गयी। इनके कंधे पर बंदूक चलाकर राजनेताओं ने खूब राजनीतिक रोटियां सेंकी किसानों की स्थिति जस की तस रही तथा आत्महत्याएं कम होने के बजाय बढ़ी हैं। राजनीतिक मंशा अगर सही होती और यदि कर्जमाफी भी सही तरीके से लागू की जाती तो आज किसान की स्थिति बेहतर होती। बिना सहायता के किसान अभी भी हालात से लड़ रहा है और अपने परिवार व अपने देश के लिए रोटी की जुगत में लगा हुआ है। 'संघर्ष ही जीवन है' वाली कहावत को किसान काफी हद तक चरितार्थ कर रहा है और कभी न खत्म होने वाला संघर्ष अभी भी जारी है।

प्रकृति

गीता मेहता
हिंदी अधिकारी,
केंद्रीय कार्यलय

अनंतकाल से सहचारी बनी है यह प्रकृति
हर क्रिया-कलाप में सहयोगी बनी है यह प्रकृति
जीवित रहने व फलने-फूलने का आधार है यह प्रकृति
भोजन, पानी, औषध व आश्रय का भंडार है यह प्रकृति
स्वच्छ जलवायु व पोषक तत्वों का आधार है यह प्रकृति
लालची मानव नहीं समझ सका
प्रकृति के जीवनदायिनी, आश्रयदायिनी मैत्री रूप को
ज्ञान-विज्ञान की चमक-दमक में
धातोपार्जन की पिपासा में
प्रकृति के सहज व सकारात्मक आवरण की ओट में कर बैठा नादानी
भूल गया मानव प्रकृति का रौद्र रूप
अनदेखा कर गया प्रकृति भी पलटवार कर सकती है
समझ नहीं सका कि प्रकृति भी हाहाकार कर सकती है
परिणामों को नजरअंदाज कर मानव ने
खूब रौंदा व संहार किया

नहीं जान सका यह तथ्य
पंचतत्वों से निर्मित यह मानव-शरीर
पंचतत्वों में ही विलीन हो जाता है
भूल गया प्रकृति में समावेशन होता है
जैसे धरती पर उगा पेड़
धरती से नाता तोड़ नहीं सकता
यदि तोड़ेगा तो जी नहीं पायेगा।
'जियो और जीने दो' की संदेशवाहिनी यह प्रकृति रक्षणीय है,
पूजनीय है, करो न इसका संहार।

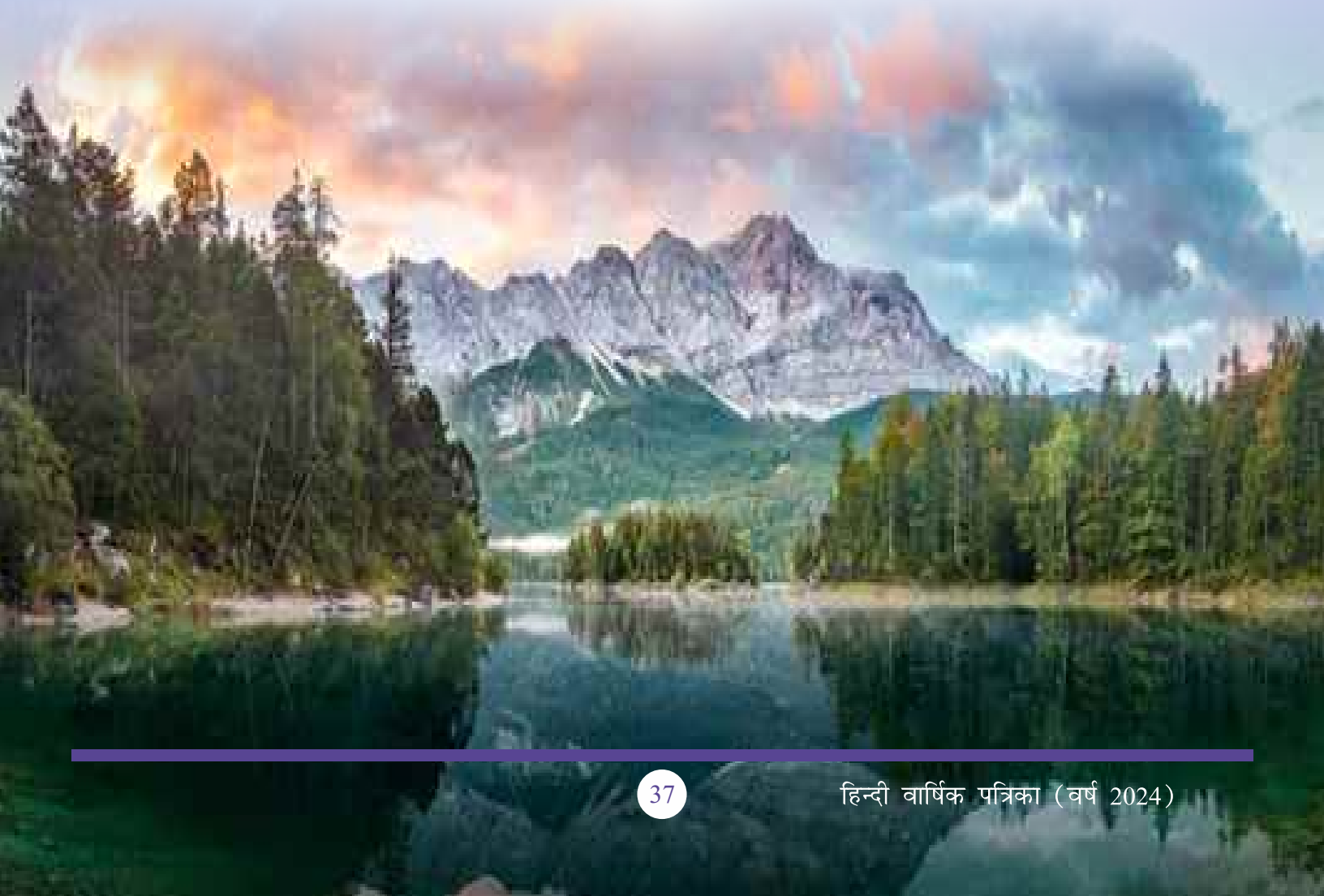

सकारात्मकता ही समाधान है

नन्दिनी दत्ता राय
सहायक पर्यवेक्षक
केन्द्रीय कार्यालय

जीवन में परेशानियाँ प्रत्येक मनुष्य को है। किसी का भी जीवन आरामदायक नहीं है। छोटा सा बच्चा हो या बुजुर्ग, सभी की अपनी अपनी परेशानी है और सभी अपने तरीके से अपनी परेशानियों को सुलझाते भी हैं।

प्रत्येक व्यक्ति का नजरियाँ अपनी परेशानियों को सुलझाने का अलग होता है। अगर परेशानियों को धैर्य से, थोड़ा हंस कर सुलझाया जाये तो मुश्किलें थोड़ी सी सरल लगने लगती हैं। अपनी समस्या अगर किसी के साथ बाँटने से कम हो तो जरूर बाँटनी चाहिये दूसरों के सुझाव कभी कभी हमें अपनी परेशानी कम करने में सहायक होते है।

कभी–कभी जिस समस्या का कोई हल न निकले, उसको समय पर छोड़ देना चाहिये, ऊपरवाला कुछ अच्छा करेगा यह सोचकर अपना कर्म पूर्ण निष्ठा से, करना चाहिये। कर्म की अवहेलना करते हुये हाथ पर हाथ रखे बैठना मूर्खता है। हाँ, यदि स्थिति अथवा समस्या हमारे वश के बाहर है तो वक्त पर छोड़ देना चाहिये इसी में संतोष व शांति है क्योंकि समय परिवर्तनशील है इसमें उतार–चढ़ाव आते रहते हैं। वर्तमान में जो चिन्ता अथवा परेशानी है, शायद कल यह कम महसूस हो और हो सकता है हमारी परेशानी हमें परेशानी ही न लगे। करो बाकी वक्त पर छोड़ दो। वक्त कभी किसी के लिये नहीं रूकता, न ही वह एक जैसा रहता है। आज की परेशानी कल शायद कम लगे और कभी–कभी तो ये परेशानी हमें परेशानी ही न लगे।

इसलिये जीवन को सरल व सहर्ष भाव से जीने का प्रयास करना चाहिये, पर कल का सोचते–सोचते आज की छोटी–छोटी खुशियों को नजरअन्दाज न करें। जीवन तो बहता पानी है आप इसे चाह कर भी रोक नहीं सकते, कहीं बाँध नहीं सकते किसी से उधार ले नहीं सकते तो आज में जीओ, कल की सोच में आज की खुशियों को बरबाद न करो।

खुश रहें व स्वस्थ रहें तथा नकारात्मक सोच से स्वयं तथा अपने इर्द गिर्द के लोगों को मुक्त रखें, समाज व अपने आप में सकारात्मक विचारों का समागम करें, क्षमा करें, जितना हो सके सबकी मदद करें, जहाँ तक हो सके अपनी भाषा को संयम में रखे तथा खुश रहें व खुशियां बांटें।

कर्म करते हुए ही धर्म का मार्ग अपनाये, दौड़ भाग की जिन्दगी में पूजा पाठ करने का वक्त शायद न मिल पाये, परन्तु मानव सेवा कर के कम से कम अपने जीवन को एक सकारात्मक दिशा तो दे सकते है।

हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के दौरान हिंदी गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' के ग्यारहवें अंक का विमोचन करते हुए प्रधान निदेशक महोदया तथा अन्य ग्रुप अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के दौरान दीप प्रज्ज्वलित करते हुए ग्रुप अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियां

कार्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की झलकियां

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान राजभाषा अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी

हमारे कार्यालय में कार्यरत ओलंपिक पदक विजेता भारतीय हॉकी टीम के सदस्य
'श्री राज कुमार पाल' को सम्मानित करते महानिदेशक महोदय

हिन्दी दिवस 2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन भारत मंडपम (नई दिल्ली)।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)

दिल्ली-110054